11

fo|k&egÙo

प्रिय शिक्षार्थी, पिछले पाठ में आपने आयुर्वेद के विषय में पढ़ा। इस पाठ में आप विद्या के महत्त्व को जानेंगे। हमारी प्राचीन समृद्ध ज्ञान परम्परा में अनेक महान ऋषि–मुनियों द्वारा विद्या के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है। वस्तुतः हमारी पूरी परम्परा ही ज्ञान परम्परा रही है। आज हमें उस महान ज्ञान परम्परा में दिये गये विद्या के महत्त्व को फिर से आत्ममात करने की जरूरत है ताकि हम विद्यावान और उत्तम नागरिक बन सकें।

mís';

यह पाठ पढने के बाद आप सक्षम होंगे:

- श्लोकों को उच्चारित कर पाने में;
- विद्या का जीवन में महत्त्व समझ पाने में; और
- संस्कृत श्लोकों का अर्थज्ञान कर पाने में।

11.1 Kku dk egÙo

1. fo|kfof/kfoghuu fd dyhuu nfguke A vdyhuk·fi fo|k<îk nor|jfi oU|r AA

vUo;%& देहिनां कुलीनेने विद्याविधिविहीनेने किम्? विद्याढ्यः अकुलीनोऽपि वन्द्यते देवतैरपि ।

> **HkkokFk%** एक उच्च कुल का होने से क्या फायदा जबकि विद्या से विहीन हो। विद्यावान उच्च कुल में जन्म न लेने के बावजूद भी देवताओ के द्वारा भी सम्मानीय होता है।

2- ekro j{kfr firo fgr fu;|³ä dkUropfHkjeR;iuh; [kneA dhfr¥p fn{k forukfr rukfr y{eh fd fd u Ik/k;fr dYiyro fo|kAA

vUo;%& कल्पलतेव विद्या मातेव रक्षति, पितेव हिते नियुङ्क्ते, खेदमपनीय कान्ता इव च अभिरमति, दिक्षु कीर्तिं वितनोति, लक्ष्मीं च तनोति, (तर्हि) किं किं न साधयति? (सर्वं साधयति इति अर्थः)।

> **HkkokFk%** ज्ञान माता की तरह रक्षा करता है, पिता की तरह सच्चा मार्गदर्शक होता है। प्रिय पत्नी की तरह दुखों को दूर कर प्रसन्न करने वाला होता है। यह हमें सम्पन्न बनाता है सभी दिशाओं में कीर्ति बढ़ाता है। ज्ञान कल्प वृक्ष की तरह है। ज्ञान से क्या–क्या प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

3- fo|k uke ujL; :ief/kda çPNUu xqIra /kuEk~
fo|k Hkkxdjh ;'kL lq[kdjh fo|k x#:.kka x#%A
fo|k cU/kqtuk fon'kxeus fo|k ijk norkk
fo|k jktlq iwT;rs u fg /kua fo|k foghu% i'kq% AA

vUo;%& विद्या विहीनः पशुः(यतोहि) विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं, प्रच्छन्न गुप्तं धनम्, विद्या भोगकरी, यशस्सुखकरी, विद्या गुरूणां गुरुः। विदेशगमने विद्या बन्धुजनो, विद्या परा देवता, विद्या राजसु पूज्यते, न हि धनम् ।।

HkkokFk% विद्या मनुष्य के अनेक रूपों मे है, यह छिपा हुआ खजाना है, विद्या सुख, यश, सुख देती है और बड़ी से भी बडी है यह विदेश गमन के समय बंधुजन के समान होती है। यह परादेवता तुल्य है। विद्या की राजा भी पूजा करते है धन की नहीं। विद्या के बिना मनुष्य पशु तुल्य है।

4- u pkjgk;Z u p jktgk;Z u HkkrHkkT;a u p Hkkjdkfj A
O;;s —rs o/kZr ,o fuR;a fo|k/kua loZ/kuçèkkue~ AA

vUo;% – चोरहार्यं न, राजहार्यं च न, भ्रातृभाज्यं न, भारकारि च न। व्यये कृते नित्यं वर्धत एव विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् ।।

HkkokFk% विद्या न चोर चोरी कर सकता है, न राजा ही छीन सकता है, न ही बंधुजन बंटवारा कर सकते है, और न ही भारकारी है। जितना खर्च करोगे उतना ही नित्य बढती रहती है। विद्या सभी धनों में प्रधान धन है।

fVIi.kh

5- Loxg iT;r e[k% Loxke iT;r çHk%A
Lon'k iT;r jktk fo}ku lo= iT;r AA

vUo;%& मूर्खः स्वगृहे पूज्यते, प्रभुः स्वग्रामे पूज्यते । राजा स्वदेशे पूज्यते (किन्तु) विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ।।

HkkokFk% मूर्ख व्यक्ति को अपने घर पर सम्मान मिलता है, प्रभु को पूरे ग्राम में मान मिलता है। राजा की पूजा/सम्मान अपने राज्य की सीमाओं में ही मिलती है परन्तु विद्वान लोग सर्वत्र पूजे जाते हैं।

6- ujL;kHkj.k :i :iL;kHkj.k x.k% A
x.kL;kHkj.k Kku KkuL;kHkj.k {kek AA

vUo;%& नरस्य आभरणं रूपं रूपस्य आभरणं गुणः। गुणस्य आभरणं ज्ञानं ज्ञानस्य आभरणं क्षमा ।।

HkkokFk% मनुष्य का आभूषण रूप है और रूप का आभूषण गुण है। गुण का आभूषण ज्ञान है और ज्ञान का आभूषण क्षमा होता है।

fØ;kdyki

नीचे दी गई तालिका में पाठ में दिये गये श्लोकों को लिखिए और उनका भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए

क्र. सं.	श्लोक	भावार्थ
1.		
2.		
3.		
4.		
5.		
6.		

ikBxr iz'u& 11-1

1. निम्नलिखित का एक वाक्य में उत्तर दीजिए–

   (i) देवतैरपि कः वन्द्यते ?

   (ii) कल्पलता इव विद्यमाना विद्या कान्ता इव किं करोति ?

   (iii) विद्या विहीनः किं सदृशः ?

   (iv) व्यये कृते किं वर्धते ?

   (v) क्षमा कस्य आभरणम् ?

vkiu D;k lh[kk\

- जीवन में विद्या/ज्ञान की भूमिका।
- ज्ञान की विशेषताएं।

ikBkr iz'u

1. निम्न का उत्तर लिखिए–

   1) विद्यायाः महिमानं पञ्चभिः वाक्यैः वर्णयत ।

   2) विद्या कल्पलतेव किं किं करोति ?

mÙkjekyk

11.1

1. विद्यावान्
2. खेदं अभिरमति
3. साक्षात् पशुः
4. विद्या
5. ज्ञानस्य